शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'वाल्मीकिरामीयं' महाकाव्य में 'छन्द विधान'

अराधिका (शोधार्थी)
संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

बीसवीं शताब्दी के मूर्धन्य कवियों में प्रोरहस बिहारी द्विवेदी का अद्वितीय स्थान है। उन्होंने 'वाल्मीकिरामीयं' महाकाव्य का प्रणयन किया है। संस्कृत वाड्मय में छन्द विधान की पुरातन परम्परा रही है। इसका स्वरूप वैदिक काल से ही विद्यमान है। आधुनिक संस्कृत साहित्य के महाकाव्य वाल्मीकिरामीयं में भाव एवं रसवर्णनानुकूल छन्द प्रयोग प्राप्त होता है। जो काव्यरस की उत्कृष्टता को वर्धित करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'वाल्मीकिरामीयं' महाकाव्य के छंद विधान पर विचार किया गया है।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

बीसवीं शताब्दी के मूर्धन्य कवि प्रो.रहस बिहारी द्विवेदी का जन्म तमसा नदी के निकट स्थित समहन नामक ग्राम में में हुआ। आपके पिता का नाम सिद्धांतज्योतिषाचार्य पंडित अभिलाष द्विवेदी एवं श्रीमती सुन्दरीदेवी है। आपने अपने पिता से घर पर ही संस्कृत की शिक्षा ग्रहण की। अपने दादा हरिहर कृपालु से व्याकरण, दर्शन और पुराण आदि विविध शास्त्रों का अध्ययन किया। डॉ.द्विवेदी ने प्रयाग से शास्त्री की परीक्षा तथा जबलपुर विश्वविद्यालय से आचार्य की परिक्षा सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण की। इसके पश्चात संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से साहित्याचार्य की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। जबलपुर विश्वविद्यालय से शोध अध्येता वृत्ति प्राप्त करते हुएसंस्कृत महाकाव्यों के आलोचनात्मक अध्ययन विषय पर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। शोध कार्य के दौरान ही आपकी नियुक्ति संस्कृत व्याख्याता के पद पर हुई। अपने सेवाकाल के दौरान डॉ.द्विवेदी ने अनेक पदों पर कार्य किया। डॉ.द्विवेदी काव्य और काव्यशास्त्रीय ग्रंथों के समीक्षक के रूप में संस्कृत जगत में प्रसिद्ध हैं। इनकी प्रथम रचना 'स्मृतिचित्रम है, जिसे उन्होंने एमए पूर्वार्द्ध में अध्ययन करते हुए लिखा था डॉ.द्विवेदी ने वाल्मीकिरामीयं महाकाव्य, तीर्थभारतम, श्री राम कथा और नारी विमर्श, साहित्य विमर्श:, श्रीकृष्णस्य स्वस्ति सन्देश:, अर्वाचीन संस्कृतमहाकाव्यानुशीलम, नव्यकाव्यतत्वमीमांसा, भारत बनाम इंडिया आदि ग्रन्थ लिखे हैं। साहित्य सेवा के लिए डॉ.द्विवेदी को भारत भारती सम्मान प्रदान किया गया। हिंदी साहित्य सम्मलेन प्रयाग ने डॉ.द्विवेदी को महामहोपाध्याय की मानद उपाधि प्रदान की। सन 2011 में आपको राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान किया गया।

भूमिका

महर्षि पाणिनि कृत अष्टाध्यायी ग्रन्थ के धातुप्रकरण में चुरादिगण के अन्तर्गत 'छदि संवरणे' धातु से असुन् प्रत्यय करने पर 'छन्दस्' की निष्पत्ति होती है, जिसका अर्थ- 'छादयति ह वा एनं पापात् कर्मणः'

है। इसी ग्रन्थ के भ्वादिगण में 'चदि' आह्लादने धातु से 'छन्द' की निष्पत्ति मानी गयी हैं जिसका अर्थ है- जो आह्लादित करे, वह छन्द है। यास्क ने 'छद्' धातु से इसकी व्युत्पत्ति बतायी -

छन्दासि छदनात् ।[1]

अर्थात् 'वेदों का नियमन करने के कारण ही यह छन्द है।' 'सामवेद' में वर्णित 'गीतिषु समाख्या'[2] के आधार पर छन्दों में गेयता के कारण सामवेद से ही छन्दों की उत्पत्ति मानी गयी है। अतः सामान्य शब्दों में गति, यति, मात्रा, लय, गण आदि की निश्चित व्यवस्था का नाम 'छन्द' है। केदारभट्ट के अनुसार-

पिङ्गलादिभिराचार्यैर्यदुक्तं लौकिकं द्विधा

मात्रावर्णभेदेन छन्नस्तदिह कथ्यते।।[3]

छन्दोबद्ध रचना के पांच लाभ हैं[4] -

1 पठन-पाठन में आनंदानुभूति।

2 पद्यों की गणना में शीघ्रता।

3 पद्यों के कण्ठस्थीकरण में सरलता।

4 पठन दोष का परिहार।

5 वेदाध्ययन में सुकरता।

प्रायः छन्दों का विभाजन दो प्रकार से किया जाता है-

1 वैदिक एवं लौकिक छन्द।

2 वार्णिक एवं मात्रिक छन्द।

वेदों में प्रयुक्त छन्द वैदिक छन्द है, जिनमें सात छन्द प्रमुख है-

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप, वृहती, पंक्ति व जगती।

लौकिक संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त छन्द लौकिक छन्द है, जिनकी उपित्त वैदिक छन्दों से हुई है। लौकिक छन्दों का मूल प्रवर्तक महर्षि वाल्मीकि को माना जाता है, क्योंकि लौकिक वाङ्मय का प्रथम पद्य उन्हीं के मुख से निसृत हुआ था। किन्तु महाकवि क्षेमेन्द्र ने छन्दों के समुचित प्रयोग में नैपुण्य का श्रेय महर्षि वेदव्यास को दिया है-

नमः छन्दोनिधानाय सुवृत्ताचारवेधसे।

तपः सत्यनिवासाय व्यासायामिततेजसे।।[6]

अर्थात् किस रस के वर्णन में किस छन्द का प्रयोग किया जाय? इस विषय में महर्षि वेदव्यास के सदृश अन्य कोई भी कवि नहीं है।

वर्णों की गिनती के आधार पर वार्णिक छन्द एवं मात्राओं की गिनती के आधार पर मात्रिक छन्द परिगणित होते हैं। इनकी गणना की सुकरता के लिए इन्हें आठ गणों में विभाजित किया गया है-

मस्त्रिगुरूस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरूः पुनरादिलघुर्यः।

जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः।।[7]

वार्णिक छन्दों में इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, अनुष्टुप् शिखरिणी, वसंततिलका, द्रुतविलम्बित आदि तथा मात्रिक छन्दों में आर्या तथा चपलादि की गणना की जाती है।

ऐसी प्रसिद्धि है कि छन्दशास्त्र के आदिप्रवर्तक आचार्य पिंगल हैं, अतः इसे पिंगल-सूत्र भी कहते हैं। छन्द की गणना षड् वेदाग्रों में की जाती है।[8] जिस प्रकार मनुष्य पाद के बिना गतिशील नहीं हो सकता, उसी प्रकार काव्यग्रन्थ बिना छन्द के गतिशील नहीं हो सकता।

आधुनिक संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य कवि डॉ. रहस बिहारी द्विवेदी प्रणीत वाल्मीकिरामीयं महाकाव्य 8 सर्गों एवं 259 पद्यों में निबद्ध है। इसमें कवि ने वैदेही का वाल्मीकि आश्रम में निवास से महर्षि वाल्मीकि द्वारा श्रीराम को धर्मोपदेश पर्यन्त कथा रस एवं भावानुरूप नव प्रमुख छन्दों में वर्णित किया है- **शार्दूलविक्रीडित, मन्दक्रान्ता, वसंततिलका, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा,**

उपजाति, अनुष्टुप्, स्त्रग्विणी एवं गेय स्वतंत्र मात्रिक छन्द।

उपर्युक्त नव छन्दों में इन्द्रवज्रा छन्द का सर्वाधिक (79 श्लोक) एवं उपजाति छन्द का सबसे कम (मात्र 2 श्लोक) प्रयोग किया है।

वाल्मीकिरामीयं में प्रयुक्त छन्द

शार्दूलविक्रीडित

यह 19 वर्णों का समवृत्त वार्णिक छन्द है जिसमें चार चरण हैं।

लक्षण- **सूर्याश्वैर्मसजस्ततः समुखः शार्दूलविक्रीडितम्**[9]

अर्थात जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण (SSS) सगण (IIS) जगण (ISI) पुनः सगण (IIS) दो तगण (SSI) एवं एक गुरू वर्ण (S) हों, तथा सूर्य (12) और अश्व (7) संख्या पर यति हो, वह 'शार्दूलविक्रीडित छन्द' है।

उदाहरण :

म	स	ज	स	त	त	गु
S S S	I I S	I S I	I I S	S S I	S S I	S

गुप्तानात्र सरस्वतीह बुधगा काशी प्रयागोन्मुखा, 19 वर्ण

भारद्वाजपदेऽत्रविश्वविदितं विद्याप्तिकेन्द्रं महत् ।

यस्मिन्नौषधयन्त्रनीतिविधिवाक्कार्षादि विद्यापरा,

सत्प्लक्षेव सरस्वतीह सततं प्रज्ञावतां वाङ्मयी।।[10]

वाल्मीकिरामीयं के प्रथम सर्ग के सम्पूर्ण श्लोकों में कवि ने इसी छन्द का प्रयोग किया हैं जिसमें वैदेही का वनवासकाल, वाल्मीकि आश्रम एवं राम द्वारा प्रयाग महात्म्य का सुंदर चित्रण है। डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने उनके इस छन्द प्रयोग की प्रशंसा में लिखा है कि "आचार्य राजशेखर की शार्दूलविक्रीडिताप्रियता को मैं एक सहस्त्राब्दी बाद, प्रो. द्विवेदी की कविता में अवतीर्ण एवं प्रतिष्ठित देख रहा हूँ।

मन्दाक्रान्ता छन्द

यह चार चरणों एवं 17 वर्णों का समवृत्त वार्णिक छन्द हैं।

लक्षण- मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौतौ ताद् चेत् ।[12]

अर्थात जिस छन्द के प्रत्येक चरण में जलधि (4) षट् (6) एवं अग (कुल पर्वत-7) पर यति हो तथा क्रमशः मगण (SSS) भगण (SII), नगण (III) दो तगण (SII) और दो गुरू (SS) वर्ण हों वह मन्दाक्रान्ता छन्द है। उदाहरण :

वाल्मीकिरामीयं के द्वितीय सर्ग गर्भिणी सीता का तपोवन आगमन, वर्ण एवं षष्ठ सर्ग में यज्ञभूमि में सीता आगमन, एवं अनसूया का क्रोधा का वर्णन कवि ने मन्दाक्रान्ता छन्द में ही अभिवव्यंजित किया है-

म	भ	न	त	त	गु	गु
S S S	S I I	I I I	S S I	S S I	S	S

सीते ज्ञात्वा प्रसवसमय मातरोऽति प्रसन्नः, 17 वर्ण
स्तासां भवं विनततनयोऽहं कथं नानुमन्ये।
तुभ्यं दत्तं वचनमपि किं पालनीयं न मे स्यात्,
कांश्चिद्युक्तिं तव वनकृतेसाधितु वै यतिष्ये।।[13]

वसंततिलका छन्द

आचार्य काश्यप ने इसे 'सिंहोन्नता' एवं आचार्य सैतव ने 'उद्धर्षिणी'[14] छन्द कहा है। यह 14 वर्णों का सम वृत्त छन्द है।

लक्षण- **उक्ता वसंततिलका तभजा जगौगः।"**[15]

अर्थात जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण (SSI), भगण (SII) दो जगण (ISI) और दो गुरू वर्ण (SS) हों तथा पादान्त में यति हो, वण वसंततिलका छन्द है।

उदाहरण- द्वितीय सर्ग में तपस्विनियों के मन में उठे प्रश्नों का उत्तर वाल्मीकि ने वसंततलिका छन्द में व्यक्त किया है-

त	भ	ज	ज	गु	गु
S S I	S I I	I S I	I S I	S	S

आजन्मशुद्धनिजसन्ततिलाभहेतो,-14 वर्ण
राष्ट्राय चापि समयं सकलं प्रदातुं।
गर्भालनमपि सतीं धरणीसुतां तां,
युष्मत्स्वभावविदितो ह्यमुचत्स राजा।[16]

इन्द्रवज्रा छन्द

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः दो तगण (SSI)] एक जगण (ISI) एवं दो गुरू वर्ण (SS) हो तथा पादान्त में यति हो वह 'इन्द्रवज्रा छन्द' है। इसमें कुल 11 वर्ण हैं।

लक्षण- **स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।**[17]

उदाहरण - प्रथम, द्वितीय एवं पंचम सर्ग को छोड़कर शेष सभी सर्गों में कवि ने इन्द्रवज्रा छन्द का प्रयोग किया है। अतः कवि ने कम शब्दों में अधिक वर्ण्य विषय अर्थात गागर में सागर भरने का कार्य किया है। तृतीय सर्ग में शत्रुघ्न का तपोवन आगमन, कुश-लव जन्म वर्णन, चतुर्थ सर्ग में शत्रुघ्न का

पुनरागमन, षष्ठ सर्ग में सीता चारित्र्य शुद्धि, सप्तम सर्ग में सीता द्वारा शुद्धि, शपथ वर्णन तथा अष्टम सर्ग राष्ट्र संचालन निर्देश का सुन्दर चित्रण इन्द्रवज्रा छन्द में किया है -

त	त	त	ज	गु
S S I	S S I	I S I	S	S

राष्ट्रस्य रक्षाकरणाय मातः-11 वर्ण

स्वकं निदेशं सफलं विलोक्य।

सद्यः स्वम प्रियपुत्रकायै,

देहीति देहीति निवेदयामि।।[18]

उपेन्द्रवज्रा छन्द-

लक्षण- **उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।19**

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण (ISI), तगण (SSI), पुनः जगण (ISI) और दो गुरु वर्ण (SS) आये तथा पादान्त यति हो, वहां उपेन्द्रवज्रा शब्द है।

उदाहरण-

वाल्मीकिरामीयं के कुल 27 श्लोकों में कवि ने इस छन्द का प्रयोग किया है। तृतीय एवं अष्टम् सर्ग के राष्ट्र सञ्चालन निर्देश में उपेन्द्रवज्रा का बहुधा प्रयोग वर्णित है

ज	त	ज	गु	गु
I S I	S S I	I S I	S	S

न जातिवादो न च वर्गवादो-11 वर्ण

राज्ये त्वदीये क्वचिदस्तु नूनम्।

आरक्षिता स्याज्जनता समस्ता,

ह्यकि×चनानां च सहायता स्यात्।।[20]

उपजाति छन्द -

एक जाति के दो वृत्तों के मेल को 'उपजाति' कहते हैं।

लक्षण- **अनन्तरोदीरित लक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।**[21]

अर्थात् जिस छन्द में इन्द्रवज्रा व उपेन्द्रवज्रा का मिश्रण हो वह 'उपजाति छन्द' है। वर्णों से युक्त यह उपजाति छन्द कीर्ति, वाणी, माला, जाया आदि के भेद से 14 प्रकार की होती है।

उदाहरण- वाल्मीकिरामीयं में मात्र 2 श्लोकों में ही इस छन्द का प्रयोग प्राप्त होता है। तृतीय सर्ग में शत्रुघ्न द्वारा अपनी भाभी सीता को अभिवादन तथा जाने की आज्ञा मांगने का सुन्दर चित्रण उपजाति छन्द में द्रष्टव्य है-

त	त	ज	गु	गु
S S I	S S I	I S I	S	S

दत्तस्त्वयां लक्ष्मणतो निदेशो-इन्द्रवज्रा

ज	त	ज	गु	गु
I S I	S S I	I S I	S	S

वधाय यो माथुरराक्षसस्य-उपेन्द्रवज्रा

ज	त	ज	गु	गु
S S I	S S I	I S I	S	S

अहं हि तस्यैव वध विधातु-उपेन्द्रवज्रा

त	त	ज	गु	गु
S S I	S S I	I S I	S	S

गच्छामि मातः! हयधुनैव तंत्र।।[22]- इन्द्रवज्रा

प्रस्तुत पद्य में 'माया उपजाति' है।

अनुष्टुप् छन्द

इसे 'पद्य' या 'श्लोक' भी कहते है। यह वार्णिक छन्द हैं।

लक्षण- **श्लोके षष्ठं गुरु श्रेयं, सर्वत्र लघु पञ्चमं।**

द्विचतुःपादयोर्ह्स्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।[23]

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में षष्ठाक्षर गुरू हो, और पंचमाक्षर लघु हो, परन्तु केवल द्वितीय तथा चतुर्थ चरण का सप्तमाक्षर लघु हो, शेष दीर्घ हो, वह 'अनुष्टुप् छन्द है।

उदाहरण- वाल्मीकिरामीयं के सप्तम् सर्ग में सीता के यज्ञभूमि में प्रवेश के समय दिव्य सौन्दर्य का वर्णन कवि ने अनुष्टुप् छन्द मेंव्यंजित किया है-

I S S I S I

अनावृतमुखी सीता दिव्यतेजः प्रभान्विता।

I S S I S I

मध्येसभं समायाता, प्रणमन्ती सतस्यमान् ।।[24]

कवि ने कुल 12 श्लोकों में अनुष्टुप् छन्द प्रयुक्त किया है।

स्त्रग्विणी छन्द

यह 12 वर्णों का समवृत्त वार्णिक छन्द है।

लक्षण- **रैश्चतुर्भियुता स्त्रग्विणी सम्मता।[25]**

स्त्रग्विणी छन्द उसे कहते हैं, जिस छन्द के प्रत्येक चरण में चार रगण (SIS) हो और पादान्त यति हों।

उदाहरण- वाल्मीकिरामीयं के पंचम सर्ग 'नैमिषारण्येऽश्वमेधयज्ञायोजनम्' में अश्वमेध यज्ञ आयोजन एवं वाल्मीकि द्वारा सीता की स्वर्ण प्रतिमा के लिए राम को उलाहना देने का वर्णन कवि ने स्त्रग्विणी छन्द में अभिव्यंजित किया है, जो द्रष्टव्य है-

र	र	र	र
S I S	S I S	S I S	S I S

अश्वमेधस्य यज्ञस्य संयोजन-12 वर्ण

नैमिषे गोमतीतीररम्ये तटे।

कार्यमास्ते ह्यतस्तद्व्यवस्था समा,

तत्र सम्पाद्यतामाशु गत्वा त्वया।।[26]

गेय स्वतंत्र मात्रिक छन्द

डॉ. रहस बिहारी द्विवेदी की यह मौलिक छन्द योजना है, जिसमें मात्राओं की समान संख्या का ध्यान न रखकर पद्यों की तुकबन्दी को मिलाकर गेय रूप में परिणत किया गया है। चतुर्थ सर्ग में लवकुश द्वारा सस्वर बालोपदेश का गान गेय मात्रिक छन्द में व्यंजित है, जो कर्णप्रिय है -

IIS IIIII SSS SS IIS SSS

जननी जनकगुरुणामाज्ञा बालाः! सतत ध्यातव्या।-29 मात्रा

SS SSSI SIS IS ISS IISS

अच्छो बालोऽसीति सर्वदा तव प्रशंसा भवितव्या।। 30 मात्रा

SSSS SS SS SS III SISS

उत्थातव्य प्रातः शीघ्र सायं शयन करणीयम्।-30 मात्रा

SISII IS ISSIISS IIII SS

दन्तधावन बिना कदाचिज्जलपान न हि करणीयम्।।[27]-30 मात्रा

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि कवि ने अपना सम्पूर्ण वाल्मीकिरामीयं महाकाव्य मात्र इन्हीं नव छन्दों में निबद्ध किया है, जो रस एवं भावानुरूप छन्दोबद्ध योजना से युक्त एक सफल एवं उत्कृष्ट काव्य है। छन्दों के उपयोग की दृष्टि से शास्त्रीय दृष्टिकोण में नवीन दृष्टिकोण का समावेश किया गया है। भावों की सुमधुर अभिव्यंजना में तथा चित्त के विस्तार में प्रयुक्त छन्दोयोजना अभिभूत कर देने वाली है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 निरूक्त 7.19

2 सामवेद 3.15

3 वृत्तरत्नाकर 1/4

4 वृत्तरत्नाकर भूमिका पृष्ठ7, 8

5 संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास-डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी पृष्ठ3

6 सुवृत्ततिलक 1/3

7 छन्दोमंजरी 1/8

8 पाणिनीय शिक्षा 25

9 वृत्तरत्नाकर 3/100

10 वाल्मीकिरामीयं 1/19, 1/1-44

11 वही नान्दीवाक् पृष्ठ 3

12 वृत्तरत्नाकर 3/97

13 वाल्मीकिरामीयं 2/1-11, 6/1-14

14 वृत्तरत्नाकर 3/80, 81

15 वही, 3/79

16 वाल्मीकिरामीयं 2/24, 2/23-29, 3/16-18, 4/22-23

17 वृत्तरत्नाकर 3/23, छन्दोमंजरी 2/1

18 वाल्मीकिरामीयं 7/11, 3/1-5, 3/7, 14, 4/1-1, 6/16-27, 7/5-25, 8/3-4, 8/9-10

19 वृत्तरत्नाकर 3/29

20 वाल्मीकिरामीयं 8/11, 3/6, 3/8-11, 3/15, 3/17, 8/1-2, 8/5-7, 8/20-23

21 वृत्तरत्नाकर 3/30

22 वाल्मीकिरामीयं 3/13, 7/26

23 श्रुतबोध 2/10

24 वाल्मीकिरामीयं 7/14, 3/19-20, 3/39-40, 5/27-28, 6/15, 7/1-4, 8/35

25 वृत्तरत्नाकर 3/56

26 वाल्मीकिरामीयं 5/2, 5/1-26

27 वही, 4/3-4, 4/5-21, 5/24